ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

महिला सशक्तिकरण दशा एवं दिशा

डा0 बसुन्धरा उपाध्याय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

किसी भी समाज के विकास–स्तर को समझने के लिए उसमें नारी की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। नारी कुल जनसंख्या का आधा भाग हो है। नारी प्रकृति की एक सुन्दरतम कृति है। माता, बहन, पत्नी, तथा प्रेयसी के रूप में वह पुरूष की होगा।

आज भी भारतीय विवाहिता नारी सीता को अपना आदर्श मानती है। इनकी कथा तो लोकविदित है। भारतीय चितंन में यदि राम पुरूषोत्म है तो सीता भी मर्यादा की पराकाष्ठा है। सीता को जीवन में कभी सुख नहीं मिला, सीता के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे पूरी तरह अपने पति के प्रति समर्पित है। उनका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं , वे पति के यश के लिए जीती है। वे अपने पति की मर्यादा के लिए प्राण भी दे देती है। विश्व साहित्य में सीता जैसा चरित्र दुर्लभ है। इसीलिए वे आर्दश भारतीय नारी है। और उनकी देवी के निर्माता है। पत्नी के रूप में वह परिवार का संचालन करती हे। माता के रूप में वह परिवार का संचालन करती है। माता के रूप में वह सृष्टा है। विभिन्न युगों में प्रत्येक राष्ट्र के महान व्यक्तियों ने यह इगिंत किया है कि महिलाओं को समाज के अभिउत्थान और निर्माण में सदैव अविस्मरणीय योगदान रहा है। पर नारी के विषय में कुछ कहने से पहले नारी शब्द पर प्रकाश डालना अधिक उपयुक्त

रूप में प्रतिष्ठा है।

यदि हम वैदिक साहित्य में नारी के व्यक्तित्व पर दृष्टि डाले तो नारी के न जाने कितने रूप हमारे सामने आते है। उस समय की नारी विदूषी और शौर्य की प्रतिमूर्ति थी। पर उस समय नारी शिक्षा भी उच्चतम स्तर पर थी। भारत वर्ष में प्राचीन काल में अपला, मैत्रीयी, थोषा, गार्गी तथा विश्वपारा आदि विदूषी नारियों ने अपने पण्डित्य से समाज को चमत्कृत किया तो दूसरी ओर उन्होने त्याग और निष्ठा का भी सुन्दर उदाहरण दिया। उवैदिक काल में पुत्री के जन्म पर दुशी होने का कोई उल्लेख नहीं मिलता परन्तु पुत्र की इक्ष्छा स्वाभाविक था। इस काल में कन्याए वेदों का अध्ययन कर सकती थी। उन्हें यज्ञ की अनुमति थी, ऋगवेद की

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

अनेक रचनाए स्त्रीयों की रची हुई है। ऋषि याज्ञवल्म्य की पत्नी मैत्तेयी दार्शनिक वाद–विवादों में भाग लेती थी। इस युग में विवाह का उद्देश्य पति पत्नी के सभी अतंविहित गुणों का विककास करना था। परिवार में पत्नी की प्रतिष्ठा थीं सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में उसकी स्थिति पति के समकक्ष थी। पत्नी के बिना मनुष्य अपूर्ण था। पत्नी के अभाव में यज्ञ नहीं हो सकता था। पर पति के प्रति पूर्ण निष्ठा स्त्री का आवश्यक गुण था।

पर समय के साथ स्त्रियों की स्थिति भी खराब होने लगी। पिता भी चिन्ता करने लगा कि इसका विवाह किस योग्य वर के साथ करू। विवाहपश्चात भी उसकी चिंता खत्म नहीं होती । वह यहजानने को उत्सुक रहता था कि उसकी पुत्री विवाहिता अवस्था में सुखी रहेगी या नहीं। पर समृद्ध परिवारों में स्त्री को पूर्ण शिक्षा दी जाती थी। लगभग 16 वर्ष की अवस्था में कन्याओं का विवाह हो जाता था। विवाह को पवित्र बंधन माना जाता था। सामाजिक जीवन को सुत्पस्थित रखना और परिवारिक जीवन को सुखमय बनाना यह उददेश्य होता ाि।

गौतम बुद्ध के काल में समाज में स्त्रियों की स्ज्ञिथति सराहनीय थी। बुद्ध स्त्रियों को संघ में प्रवेश देने के विरूद थे। छठी सदी के बाद स्त्रीयों की स्थिति पतन की ओर जाने लगी। पुत्री की स्थिति पुत्र की तुलना में गिर गयी थी। कथा सरित्सागर के अनुसार पुत्र सुख का प्रतीक था और पुत्री दुख का मूल।

इस लाल धनी परिवारों को कन्याओं को हीक उच्चशिक्षा प्राप्त होती थी। मउन मिश्र की पत्नी अपने पाडिंत्य के लिए प्रसिद्ध थी। शील भयरिका और देवी जेसी कवियत्रियां अपनी मनोरम कात्यशैली के लिए प्रसिद्ध थी, पर इस काल में बाल विवाह की प्रथा प्रारंभ हो गयी थी। पत्नी से यह आशा की जाती थी कि वह हर प्रकार से पति की सेवा करें, पर पति का कतर्व्य था कि वह अपनी पत्नी का पूरा ध्यान रखें, कोई भी पुरूष अकारण ही अपनी पत्नी को दुख नहीं दे सकता था। यदि ऐसा करता था तब राजा उसे दंड दे सकता था।उस समय अभिजात वर्ग के लोग कई पत्नियां रख सकते थे, पर विध्वाओं से आशा की जाती थी कि वह अपने पति के स्मृति में शेष जीवन व्यतीत करे। सती होने के उदाहरण भी मिलते है।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

राजपूत काल ऐसी में अनेक रानियों के नाम मिलते है। जिन्होने अपने पति की मृत्यु के होने पर राज्य का शासन योग्यतापूवर्क संचालित किया है। इस काल में देवदासी और वैश्यावृति का चलन था। प्राचीन भारत में आभूषण, वस्त्र आदि पर ही स्त्री का अधिकार समझा जाता था।

मध्ययुगीन भारत की सबसे महत्वपूर्ण घटना हैं मुस्लममानों का भारत पर आक्रमण और विजय। इसने भारतीय इतिहास की दिशा बदल दी। इस काल में पर्दों प्रथा शुरू हो गयी। मुसलमानों में पर्दा प्रथा का कठोरता से प्रचलन ाि इसका प्रभाव भारत में आने पर इस पर और अधिक दृड़ता से अचरण किया। स्त्रियों कका घर–घर निकलना बन्द सा हो गया। हिन्दुओं ने अपनी स्त्रियों की रक्षा के लिए पर्दा प्रथा को अपनाया। हिन्दु में पर्दा प्रथा कस जारी होना यह एक बहुत बड़ा कारण था। राजाओं और सरदारों के घरों में पुरूषों और स्त्रियों के बीच संवाद भेजने के लिए हिजड़ों को नौकरी पर रखा जाता था। घर से बाहर निकलना बंद हो गया, शिक्षा तो बहुत दूर, पर राजपूत परिवारों में परदे का चलन कम था। यह स्त्रियां युद्ध कला में निपूण होती थी। वे शिकार पर भी जाया करती थी। इस काल में विवाह जल्दी हो जाया करते थे। विवाह में कन्या की सहमति नहीं होती थी। विवाह उपरान्त ससुराल वालों के नियन्त्रण में रहती थी। मुस्लमानों मुं तलाक और पुर्न विवाह प्रचलित था। पर हिन्दुओं में इसका निशेद था। मुबल शासको ने सति प्रथा को रोकने का भरक्स प्रयत्न किया लेकिन वो इस कार्य में सफल न हो सके।समाज में माता को आदर का स्थान प्राप्त था इतने सार प्रतिबन्धों के बावदूज कुछ मुस्लिम महिलाओं ने विद्धता के क्षेत्र में अपना नाम कमाया। हुमायु की बहन गुलबदन बेगम ने हुमायु नामा नाम से हुमायु की जीवनी लिखि थी। शॉह जहा की पुत्री जहॉआरा कवियत्री थी। सलीमा सुल्ताना, नूरजहॉ और जिबरानिन्सा ने श्रेष्ठ काव्य रचना की थी। हिप्दुओं में मीरा बाई, रानी दुर्गावती और तारा बाई अपने समय की विख्यात हिन्दु महिलाये थी। मीरा बाई ने भक्ति के क्षेत्र में और रानी दुर्गा वती तथा तारा बाई ने शासनिक और सैनिक क्षेत्रों में अपना नाम रोशन किया।

यह समय घेर अवनति और अद्धोगति का समय था। देश अनेक रजवाड़ों में विभगत था। जो कि आपस में ही लड़ा करते थे। ईष्ट इंडिया कम्पनी धीरे–धीरे

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

अपने पेर पसार रही थी, हमारे ही देश के अनेक लोग विदेशियों की मद्द कर रहे थे। भारतीय लोग अपने प्राचीन वैभव को भूल चुके थे। गीता उपनिषेधों और वेदान्त की शिक्षा लोगो की समझ से परे थी। भारत में पुःर्न जागरण का काल राजा राम मोहन राय से प्रारम्भ होता है। इन्होंने 20 अगस्त 1928 को ब्रहम समाज की सीापन की, इधर अंग्रेजी शिक्षा का भी प्रचार शुरू हो गया था। भारमत में समाज सुधार के अनेक आन्दोलनों ने जन्म ले लिया। इन्होंने स्त्रियों की सम्स्यों की ओर ध्यान दिया। इन्होंने समाज की मुख्य धारा में स्त्रियों को लाने का प्रयास किया।

राजा राम मोहन राय ने समाज सुधारों की जो लहर उत्पन्न की थी उसके फल स्वरूप आगे कुछ वर्षों में कन्या वृद बन्द हुआ। विध्वाहों के पुर्न विवाह का रास्ता खुला दास्ता की प्रथा का अन्त किया गया। और सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह हुआ कि स्त्रियों की शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये। स्त्रियों के उत्तराधिकार का सर्म्थन किया।

स्वामी विवेकानन्द स्त्रियों को आदर की दृष्टि से देखते थे। वो प्रत्येक स्त्री को मॉ तथा बहन के रूप में पूजते थे। उनके समय स्त्रियों की दशा दैनीय थी। स्त्रियों का मानन्सिक स्तर बहुत नीचा समझा जाता था। स्वमी जी ने महिलाओं को दास्ता से मुक्त किया, पर्दे से बाहर निकाला।

सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की प्रेरणा दी तथा उनके षिक्षा गृहण करने पर बल दिया। स्वामी जी यह नही समझ पाते थे कि स्त्रियों और पुरूषों में इतना भेदभाव क्यों जबकि वेदांत की घोषणा है कि सभी प्राणियों में एक ही आत्मा है। वेदाध्ययन का स्त्रियों को अयोग्य ठहराया, पर वह यह भूल गये कि मैत्रेयी गार्गी आदि पुण्यस्मृति महिलाओं ने ऋषियों का स्थान ले लिया था। सहस्त्र वेदज्ञ ब्राहमणों की सथा में गार्गी ने याज्ञवल्म्य को वृहद के विषय में शास्त्रार्थ करने के लिये ललकारा था। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि संसार के सथी उन्नतिशील राष्ट्रों ने अपने अपने राष्ट्रीय जीवन में स्त्रियों को समुचित स्थान देकर ही महत्ता प्राप्त की है। जो राष्ट्र स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। वह चाहते थे कि स्त्रियों में इतनी शकित होनी चाहिए कि वह अपनी रक्षा स्वयं कर सके किसी के ऊपर निर्भर न रह सके।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

स्वामी विवेकानन्द स्त्रियों की शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। स्वामी जी के शब्दों में ''कुमारियारें को धर्मपरायण व निति परायण बनाना पड़ेगा, जिससे भविष्य में अच्छी गृहणियॉ हों, इन कन्याओं से जो सन्तान उत्पन्न होगी वह इन विषयों में और इन्नति कर सकेगी, जिनकी माताएँ शिक्षित और निति परायण है उनके घर में बड़े लोग जन्म लेते हैं'' जिस प्रकार पुत्रों को हम शिक्षा देते है उसी प्रकार हम अपनी पुत्रियों को भी शिक्षा देनी चाहिए। विवाह भी शिक्षा के उपरान्त करे तो अधिक श्रेयस्कर होगा।

हमारे भारत वर्ष में आज भी स्त्रियों में ऐसा चरित्र, सेवा भाव, स्नेह, दया दृष्टि, भक्ति पायी जाती है पृथ्वी पर और कहीं ऐसी नही है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करने पर वह साधारण सी स्त्री एक आदर्श स्त्री बन जाती है। मुझे समझ नहीं आता कि स्त्री पुरूष में इतना भेद क्यों। मनुष्य शक्ति को पूजता है जो मनुष्य मानता है कि संसार में ईश्वर है, तो उसे यह भी ज्ञात होना चाहिए कि स्त्रियों में भी भरपूर मात्रा में शक्ति पायी कजाती है जहॉ स्त्रियॉ प्रसन्न होती है वहॉ की उन्नति को कोई रोक नहीं सकता, पर जहॉ स्त्रियॉ दुखी रहती हैं उस कुटुम्ब या देश की उन्नति हो ही नहीं सकती। पर स्त्रियों को यह सब कठिनाई हम शिक्षा के द्वारा ही खत्म कर सकते हैं जिस प्रकार बड़ी सावधानी से हम पुत्रियों का लालन पालन करते हैं उसी प्रकार उनकी शिक्षा का भी हमें ध्यान रखना होगा।ककहते सभी है पर यर्थाथ कुछ और है, हम स्त्रियों को सदैव निःहाय अवस्था में रहने और दूसरों पर गुलाम के समान अपलम्बित रहने की शिक्षा दी जाती है। अगर स्त्रियां शिक्षित होगी तब वह अपनी समस्या को अपने तरीके से सुलझा पाएगी। हमारी भारतीय नारिया इस कार्य में संसार की अन्य स्त्रियों से कम नहीं है। लड़कियों को अच्छी शिक्षा दी जानी चाहिए नहीं तो भ्रष्टाचार व्यभिचार गड़ने की आशंका रहती है। किताब पड़ लेने से कोई शिक्षित नहीं हो जाता हमें अपने विचारों को भी बहलाना पड़ेगा। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण हों। मानसिक शक्ति बड़े, बुद्धि विकसित हो हमारे देश की महिलाओं की आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी। थोड़े से संक्ट की आशंका से आसुओं को बहाना छोड़, बड़ी से बड़ी मुसिबतों का बड़ी बहादुरी से उस समस्या का समाधान खोजे। आज के समय

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

में अपनी आत्मउ रक्षा के गुण भी सीखे वीरता के लिए महारनी लक्ष्मीबाई को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। जीवन के सभी आदेशों का पालन करने के लिए उन्हें शिक्षित किया जाये। हर विषय की शिक्षा स्त्रियों को दी जाये। इससे उनका ही नहीं पूरे समाज का हित होगा। यदि एक स्त्री बृहमज्ञानी हो गयी तो ऐ व्यक्तित्व के तेज से सहस्त्रों, स्फूर्ति प्राप्त करेगी। इस देश और जिससे कि स्त्री शिक्षा का प्रचार हो सके। इतिहास और पुराण गृहत्यावस्थी और कला कौशल गृह जीवन के कर्तव्य और चरित्र गहन के सिद्वान्तों की शिक्षा देनी होगी। जब कलाकत्ता में विश्व विद्यालय में स्त्रियों की शिक्षा का प्रबन्ध किया तब स्वामी विवेकानन्द बहुत प्रसन्न हुए थे। प्रत्येक स्त्री जबतक शिक्षित नहीं होगी तबतक समाज का विकास सम्भव नहीं।

''नारी उत्थान युग'' – नवजागरण काल में स्त्रीयों की दशा में बहुत सुधार हुआ 1903 में इंडियन नेशनल सोशल कान्फ्रेंस में एक पृथक स्त्री विभाग स्थापित किया गया। इस युग में बहुत महिलायें उभरी पर प्रमुख महिलायें निम्न है– मां शारदा देवी, पंडित रमाबाई, फ्रांसिना, सोरावाजी, अवंतिका बाई गोखले, गोदावरी बाई, यशोदा बाई आगरकर, माधवी अरूयर, एनी वेसेंट,, सरला देवी चौधरी, रानी चिमन बाई, हीरावाई टाटा और न जाने कितनी महिलाओं ने आगे आकर स्त्रियों के हित में कार्य किये। 1909 में प्रथम स्त्री सम्मेलन हुआ उसमें महिलाओं से सम्बंधित समस्याऐं सामने रखी गयी। 1910 में इलाहबाद में दूसरा स्त्री सम्मेलन हुआ। श्रीमती सरला देवी चौधरानी इस सम्मेलन की सचिव थी। इन सम्मेलनों के कारण जनमत में परिर्वतन होने लगा और स्त्रियों से सम्बंधित अनेक सुधार होने लगे। शिक्षाविवद स्त्रियों की उच्चशिक्षा पर भी ध्यान देने लगे। सैडलर आयोग ने इस प्रश्न पर विचार किया और सिफारिश भी की शिक्षा विस्तार की प्रत्येक योजना में बालिकाओं की शैक्षिक आवश्यकताओं की दिशा में विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। स्त्रियों के लिए विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की संख्या में वुद्धि की गयी।

स्त्रियों में शिक्षा के कारण धीरे–धीरे जिन कुप्रथाओं ने जन्म लिया था वह सब खत्म होने लगी। 1914 में एक बंगाली लड़की ने स्वयं को जिदा जला डाला था क्योंकि उसके पिता उसकी शादी में दहेज के लिये अपना घर रिवी रख दिया

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

था और उस लड़की का नाम था स्नेहलता। समूचे देश की महिलाओं का ध्यान इस ओर खीचा। धीरे–धीरे सरकारी विभागों का विस्तार होने लगा जिनमें स्त्रियों को ध्यान में रखकर पद सृजित किये महिलाए नौकरियॉ करने लगी। आर्थिक स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों के कारण स्त्रियों की दशा में इतना अधिक परिवर्तन आया कि पिछले सात सौ वर्षों से जो न हो सका था वह हो गया। स्त्रियों की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। महिलाओं के अन्दर अभूतपूर्व जागृति पैदा होने लगी। कस्तूरवा गांधी, कमला नेहरू, विजयालक्ष्मी, मणिवेन पटेल, अरूणाआसफ अली, सुचेता कृपलानी, राजकुमारी अमृत कौर, जानकी देवी बजाज, सुभद्रा कुमारी चौहान, इंदिरा गांधी, रामेश्वरी नेहरू, सत्यवती, डॉ0 सुशीला नैयर, और भी है पर सभी का नाम देना थोड़ा कठिन है। इन सभी महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन महिलाओं ने स्वतंत्रता प्राप्ति में सहयोग प्रदान किया। गांधी जी के व्यक्तित्व के निर्माण में जिन महिलाओं ने योगदान दिया उनमें उनकी दासी रम्भा, माता पुतली बाई और पत्नी कस्तूरवा का विशेष रूप से नाम लिया जा सकता है। रम्भा ने गांधी जी को राम नाम की दीक्षा दी। गांधी जी नारी को अबला नहीं मानते थे। उनके विचार में स्त्री को अबला कहना उसका अपमान करना हे। अगर ताकत से मतलब पाशवी ताकत से है तो निसंदेह पुरूष ताकतवर है। पर नैतिक शक्ति की बात करें तो महिलाओं में अधिक शक्ति है। नारी में सहन शक्ति और धैर्य के अतिरिक्त श्रद्धा का गुण भी विशेष रूप से पाया जाता है। जयशंकर प्रसाद ने नारी को साक्षात 'श्रद्धा' कहा है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत पग नग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।

पर इस समाज में स्त्री को पुरूष योग्या और मनोविनोद की वस्तु मानते है कभी नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की ओर ध्यान नहीं देते। पर आज के समय में ऐसा नहीं है।

धीरे धीरे लड़कियों के लिये शिक्षा की व्यवस्था हो गयी। हजारों की संख्या में स्त्रियॉ शिक्षा प्राप्त करने लगी इसी समय व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर अनेक स्त्रियॉ नर्स,डॉक्टर और अध्यापिकाऍ भी बनने लगी। इस एक शताब्दी में भारतीय

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारीपरिवर्तन आया। जहॉ 19वीं शताबदी शिक्षा बिल्कुल नहीं वे अज्ञान्धकार में डूबी थी, वहॉ इसी शताब्दी के अंत में लाखों लड़कियॉ स्कूल और कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करने लगी। शिखा की ओर महिलाओं का नजरिया बदल गया। स्त्रियों की स्थिति को उन्नत करने की दृष्टि से अनेक विदूषी महिलाओं ने भी प्रयास किये। रामाबाई संस्कृत की महान विदूषी थी। उन्होंने देश के भिन्न भिन्न भागों में जाकर सामाजिक अन्याय के विषय में स्त्रियों को अवगत कराया। उन्होंने आर्यमहिला समाज आरंभ किया जहॉ 1982 में 300 स्त्रियॉ शिक्षा प्राप्त कर रही थी। इन सभी प्रयत्नों से स्त्रियों की स्थिति में सुधार आया।

20वीं सदी के आरंभ में स्त्रियों को सभी प्रकार के निर्योग्यताओं को समाप्त करने एवं उन्हें समाज में उन्नत स्थान दिलाने हेतु सशक्त स्त्री आंदोलनों का सूत्रपात होने लगा स्त्री शिक्षा का प्रसार प्रचार और अधिक हो सके। इसके लिए 1932 में 'लेडी इर्विन कॉलेज' की स्थापना की गयी। इसी समय स्त्री पुरूष समानन मताधिकार की मांग की गयी। महिला सम्मेलनों का काफी प्रभाव भी पड़ रहा था, उस समय संसीा को काफी संघर्ष करना पड़ा। इस संगठन के अतिरिक्त विश्वविद्यालय महिला संघ भारतीय ईसाई महिला मंडल एवं कस्तुरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट आदि के द्वारा भी स्त्रियों में जागृति लाने हेतु अनेक एवं सराहनीय काय्र किये जाने लगे। पर शिखा का विशेष योगदान रहा। शिक्षा के कारण ही स्त्रियों में आत्मविश्वास का, आर्थिक सवावलम्बन की क्षमता और परम्परागत स्थिति को परिवर्तित करने में योगदान दिया। शिक्षा के कारण ही स्त्रियों की मानसिक सोच बदली है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में स्त्री शिक्षा में आश्चर्य जनक प्रगति हुयी है। जहॉ 1901 में 0.60% महिलाएॅ शिक्षित थी। अब इनका प्रतिशत 24.88 है। 1971 के आंकड़ों के अनुसार देश में शिक्षा का कुल प्रतिशत 19.35 था। 1981 में 36.17 हो गया है और महिलाओं का 39.49 हो गया है। अगर हम व्यावसायिक शिक्षा की बात करें तो इतनी जल्दी महिलाओं ने उस क्षेत्र में भी बाजी मारी है। बड़ती हुयी स्त्रीयों की शिक्षा अनेक सामाजिक कुरीतियों से भी निजात दिला रही हे। डॉ0 पलिकर ने देश में शिक्षा के व्यापक प्रभाव को देखते हुए लिखा है कि ''स्त्रियों की शिक्षा और

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

उनकी राजनीतिक जागृति ने उस कुल्हाड़ी को तेज कर दिया है, जिसकी सहायता से सामाजिक जीवन की जंगली झाड़ियों को साफ करना सरल हो गया है। स्त्री शिक्षा ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति विशेष रूप से सजग किया है। विचारों में ीाी परिवर्तन ला दिया हे। स्त्री शिक्षा जीवन के संर्वागीण विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्त्री शिक्षा के कारण ही जॉति पाति के बंधनों को शिथिल करने ओर मनुष्य को रूढ़िवादी विचार धाराओं के प्रभाव से छुटकारा दिलाने में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

मनुष्य चॉहे या न चाहे पर परिवर्तन तो आ ही जाता है। औद्याकगीकरण ने स्त्रियों का कारखानों में काम करने की सुविधा प्रदान की है। आधुनिक समय में शिक्षित महिलाए कार्यालयों, उद्योगो, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सालयों, और समाज कल्याण केन्द्रों में अधिक से अधिक संख्या में कार्य कर रही है। कुछ समय पहले तक जो पर्दे के पीछे सिमटी हुयी सी थी। आज वह अध्यापिका, नर्स, लिपिक, डाक्टर, आशुलिपिक, विकेत्री, स्वगतिका और अनेक अन्य प्रस्थितियों में कार्य करने लगी है। स्त्रीयों के लिए नौकरी में भी विशेष सुविधा हे। स्त्रियां राजनीति में भी बड़चड़ कर भाग ले रही हे। 1926 से विधान मंडल में महिलाए है। शिक्षा के कारण 1946 में संविधान सभा के चुनाव में दुर्गाबाई, रेणुका राय, सरोजनी नायडू तथा हंसा मेहता आदि ने सफलता प्राप्त की। आज भारतीय महिलाओं ने राज्यपालों, कैबिनेट स्तर के मंत्रियों और राजदूतों के रूप में यश प्राप्त किया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि सन् 1966 में श्रीमती इंदिरा गॉधी दल की नेता चुनी गयी। बाद में उन्होने प्रथम महिला प्रधानमंत्रि पद को भी सुशोभित किया।

आज की स्त्री में काफी सामाजिक जागरूकता आ गयी हे। आज शिक्षा के कारण स्त्रियां रूढ़ियों के चुगल से मुक्त हो रही है और स्वतंत्रता के वातावरण में सास ले रही है। विज्ञान और औद्योगीकरण के क्षेत्र में भी महिलाए किसी से कम नहीं। आजइ की महिला प्रशासनिक सेवाओं, महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत है। आज की महिला किसी आर्थ मं पुरूष से कमजोर नहीं है। सांस्कृतिक और क्रीड़ा के क्षेत्रों में भी महिलाए अपने साथ अपने देश तथा राष्ट्र का नाम रोशन कर रही हे। नारी किसी भी अर्थ में 'अबला' नहीं हे। और इन सभी क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं ने यह

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

सिद्ध किया है किसी भी प्रकार अपनी कलात्मक अभिरूचियों व बौद्धिक क्षमताओं में किसी भी तरह पुरूषें से पीछे नहीं है। आज की स्त्री पुरूष के साथ कधे से कधा मिलाकर कार्य करने की क्षमता रखती है। पर यह सब शिक्षा के बगैर नहीं हो सकता। गर शिक्षत प होती तो आज भी वह चूल्हा ही झोकती। शिक्षा के कारण ही वह आज अपनी समस्यायें स्वयं हल कर सकती है।

शिक्षा के क्षेत्र में इतनी तेज से आगे बढ़ रही है कि 20 वर्ष पहले जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों की संख्या बड़ रही है। उच्च स्तर पर होन वाली परीक्षा हो या फिर निम्न स्तर की नौकरी स्त्रियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि उनका मानसिक स्तर पुरूषें से कम नहीं। परीक्षाओं में सर्वाधिक अंक लाकर यह सिंद्ध करती है कि हम भी पुरूषें से कम नहीं।

1. ऋगवेद 117, 528, 891, 981 और 139–40
2. बृहदाख्यक उपनिषद 2.4
3. कथासरित्सागर 28.6

एलएस0एम0रा0स्ना0महा0पिथौरागढ
मो0न0 9410700853

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)